11 अध्याय

विजयनगर बहमनी साम्राज्य

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- विजयनगर और बहमनी साम्राज्य की स्थापना कैसे हुई और दक्षिण भारत का यह राजवंश कैसे लगभग 300 वर्षों तक शासन कर पाया।
- विजयनगर और बहमनी साम्राज्य की प्रशासनिक और भू-राजस्व नीति कैसे अन्य शासकों से भिन्न रही है।
- भारतीय कला, संस्कृति, साहित्य का विकास कैसे और किन परिस्थितियों में बेहतर स्थितियों में पहुँच पाया।

विजयनगर साम्राज्य (Vijaynagar Empire)

विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 ई. में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाईयों ने अपने गुरू विद्यारण्य की प्रेरणा से तुंगभद्रा नदी के तट पर अनैगोण्डी में की। ये वारंगल के काकतीयों के सामन्त थे और बाद में काम्पिली राज्य में मंत्री बने। इस राज्य की राजधानियाँ क्रमश: अनैगोण्डी, विजयनगर, बेनुगोण्डा तथा चन्द्रगिरि बनी। विजयनगर के शासकों ने सदैव भगवान विरूपाक्ष की ओर से शासन करने का दावा किया, जिनके बारे में माना जाता था कि वे कृष्णा नदी से दक्षिण की ओर की समस्त भूमि के स्वामी हैं। विजयनगर साम्राज्य के चार राजवंशों ने लगभग तीन सौ वर्षों तक शासन किया।

तालिका 11.1: प्रमुख राजवंश, शासनकाल एवं संस्थापक

राजवंश	शासनकाल	संस्थापक
संगम वंश	1336-1485 ई.	हरिहर और बुक्का
सालुव वंश	1485-1505 ई.	नरसिंह सालुव
तुलुव वंश	1505-1570 ई.	वीर नरसिंह
अरविडु वंश	1570-1650 ई.	तिरूमल्ल (तिरूमाल)

संगम वंश (1336-1485 ई.)

हरिहर प्रथम (1336-1356 ई.) इस वंश का संस्थापक था। इसने अपनी राजधानी अनैगोण्डी को बनाया। इसने 1346 ई. में होयसल राज्य व 1352-53 ई. में मदुरै को अपने साम्राज्य में मिलाया। इसके पश्चात् बुक्का प्रथम शासक बना इसके शासन में बुक्का प्रथम (1356-1377 ई.) ने 1374 ई. में चीन में एक दूत मण्डल भेजा गया। इसने 1377 ई. में मदुरै के अस्तित्व को मिटाकर, विजयनगर साम्राज्य को सम्पूर्ण दक्षिण भारत में फैला दिया।

कुमारकम्पन की पत्नी गंगादेवी ने इस विजय का वर्णन अपनी 'मदुराविजयम्' में किया है। उसने हिन्दू वेद-मार्ग-प्रतिष्ठापक की उपाधि ग्रहण की। हरिहर द्वितीय (1377-1404 ई.) ने राजव्यास/राजबाल्मीकी की उपाधि धारण की। इसकी सबसे बड़ी सफलता पश्चिम में बेलगाँव और गोवा को बहमनी राज्य से छीनना था। विद्वान सायण इसका मुख्यमंत्री था।

देवराय प्रथम (1406-1422 ई.) अपने राज्यारोहण के तुरन्त बाद इसे फिरोजशाह बहमनी के आक्रमण का सामना करना पड़ा। पराजय के परिणामस्वरूप इसे सुल्तान फिरोजशाह के साथ अपनी लड़की की शादी करनी पड़ी और दहेज के रूप में दोआब क्षेत्र में स्थित बाकापुर भी सुल्तान को देना पड़ा, ताकि भविष्य में युद्ध की गुंजाइश न रहे। देवराय प्रथम द्वारा जनकल्याण हेतु 1410 ई. में तुंगभद्रा पर बाँध बनवाकर अपनी राजधानी के लिए जल प्रणाली की व्यवस्था की।

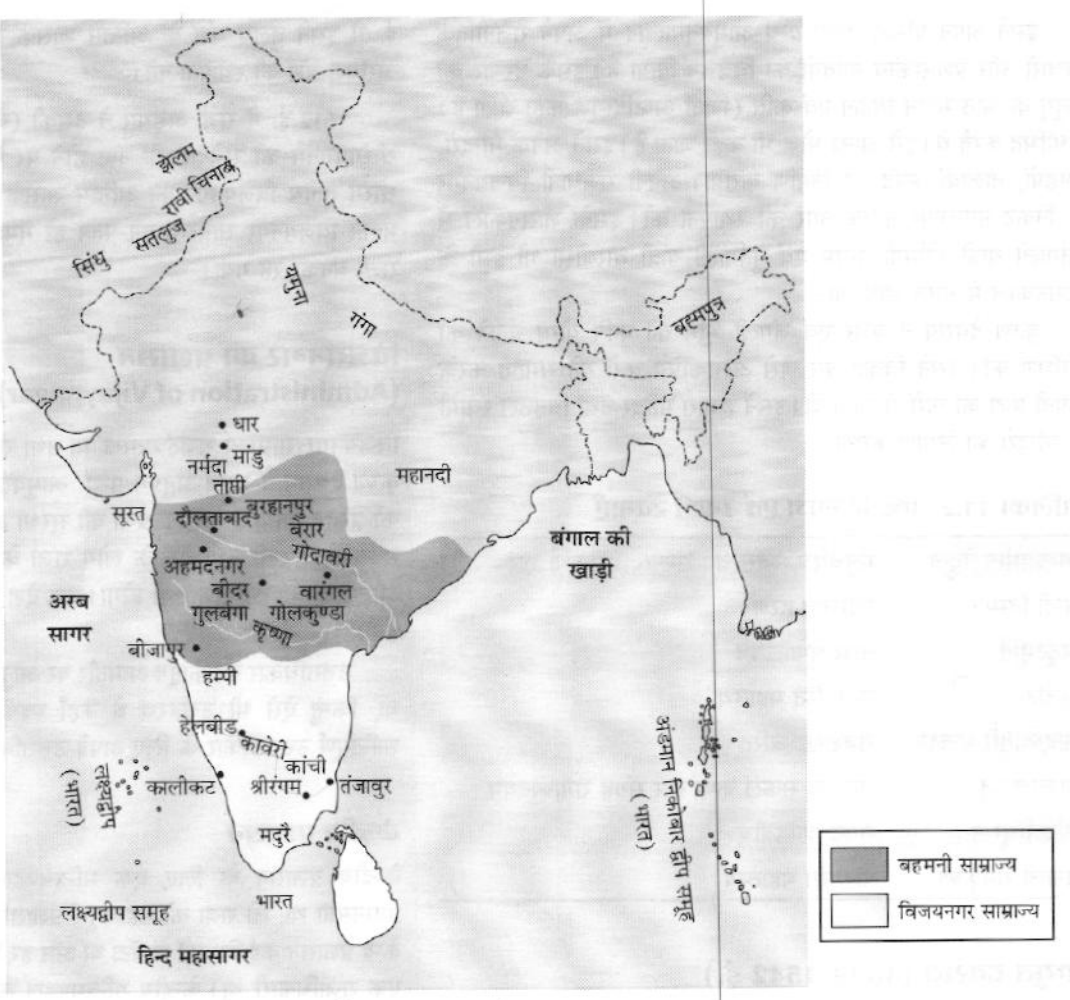

चित्र 11.1: विजयनगर बहमनी साम्राज्य

इसके शासन काल में इतालवी यात्री निकोलोकोण्टी ने विजयनगर की यात्रा की। कोण्टी ने विजयनगर के सामाजिक जीवन, त्योहारों का भी वर्णन अपने वृत्तान्त में किया है। इसके दरबार में हरविलासम तथा तेलुगू कवि श्रीनाथ निवास करते थे।

देवराय द्वितीय (1422–1496 ई.) के अभिलेख सम्पूर्ण विजयनगर साम्राज्य में प्राप्त हुए हैं। इसको इम्माडि देवराय या प्रौढ़ देवराय भी कहा जाता था। पुर्तगाली यात्री नूनिज के अनुसार, क्विलान, श्रीलंका, पुलीकट आदि इसे कर देते थे। इसके अभिलेखों में उसके लिए गजबेटकर उपाधि अर्थात् हाथियों के शिकारी का उल्लेख मिलता है। अपनी सेना को शक्तिशाली बनाने तथा बहमनियों की बराबरी के लिए इसने सेना में मुसलमानों को भी भर्ती किया तथा उन्हें जागीरें प्रदान की। देवराय द्वितीय के शासनकाल में ईरान के यात्री अब्दुर्रज्ज़ाक़ ने विजयनगर की यात्रा की। देवराय द्वितीय के बाद मल्लिकार्जुन और विरूपाक्ष नामक दो कमजोर शासकों ने शासन संभाला।

सालुव वंश (1485–1505 ई.)

एक शक्तिशाली सामन्त नरसिंह सालुव ने 1485 ई. में सालुव वंश की स्थापना की। इसे प्रथम बलापहार कहा गया। नरसिंह सालुव ने नरसा नायक को सेनापति नियुक्त किया, जिसने चोल, पाण्ड्य और चेरों पर आक्रमण कर इन्हें विजयनगर की प्रभुसत्ता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।

तुलव वंश (1505–1570 ई.)

1505 ई. में नरसा नायक के पुत्र वीर नरिसंह ने शासक की हत्या कर तुलुव वंश की स्थापना की। वीर नरसिंह के इस तरह राजगद्दी पर अधिकार करने को विजयनगर साम्राज्य के इतिहास में द्वितीय बलापहार की संज्ञा दी गई। इसकी मृत्यु के पश्चात् कृष्ण देवराय (1509–1529 ई.) सिंहासनारूढ़ हुआ। यह विजनगर का महानतम शासक सिद्ध हुआ। बाबर ने अपनी आत्मकथा में इसे भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक कहा है।

इसने अपने प्रसिद्ध तेलुगू ग्रन्थ आमुक्तमाल्यद में अपने राजनीतिक विचारों और प्रशासकीय नीतियों का विवेचन किया है। इसके दरबार को तेलुगू के आठ महान विद्वान एवं कवि (जिन्हें अष्टदिग्गज कहा जाता है) सुभोभित करते थे। इसे आन्ध्र भोज भी कहा जाता है। इसने अनेक मन्दिरों, मण्डपों, तालाबों आदि का निर्माण कराया। अपनी राजधानी विजयनगर के निकट नागलापुर नामक नगर की स्थापना की। इसके शासनकाल में पुर्तगाली यात्री डोमिगो पायस एवं पुर्तगाली यात्री बारबोसा भी इसी के शासनकाल में भारत आया था।

कृष्ण देवराय ने बंजर एवं जंगली भूमि को कृषि योग्य बनाने की कोशिश की। उसने विवाह कर जैसे अलोकप्रिय करों को समाप्त करके अपनी प्रजा को करों से राहत दी। इसने हजारा मन्दिर तथा विठ्ठल स्वामी के मन्दिरों का निर्माण कराया।

तालिका 11.2: अष्ट दिग्गज एवं उनकी रचनाएँ

अल्लासीन पेदन्न	मनुचरित्र, स्वरोचित सम्भव, हरिकथा सार
नन्दी तिम्मन	पारिजात हरण
भट्टमूर्ति	नरस भूपालियम
धूर्जटि	कलहस्ति महात्म्य
मादय्यगिरि मल्लन	राजशेखर चरित
अच्चलराजु	रामचन्द्र सकल कथा सार संग्रह रामाय्युदयम
पिंगलीसूरन्न	राघव पाण्डवीय
तेनाली रामकृष्ण	पाण्डुरंग महात्मय

अच्युत देवराय (1529-1542 ई.)

यह कृष्ण देवराय का नामजद उत्तराधिकारी था। इसके दरबार में नूनिज कुछ समय तक रहा था।

सदाशिव (1542-1570) के शासन की वास्तविक शक्ति अरविडु वंशीय मंत्री रामराय के हाथों में थी। इसने सेना में बड़ी संख्या में मुसलमानों की नियुक्ति की थी। इसी के काल में प्रसिद्ध तालीकोटा का युद्ध (23 जनवरी, 1565) हुआ। इस युद्ध में विजयनगर के विरुद्ध एक महासंघ बना, जिसमें अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा और बीदर शामिल थे, जबकि बरार इस संघ में सम्मिलित नहीं हुआ।

23 जनवरी, 1565 को संयुक्त सेनाओं ने तालीकोटा (राक्षसी तंगड़ी या बन्नीहट्टी) के युद्ध में विजयनगर की सेना को बुरी तरह पराजित किया। सत्तर वर्षीय रामराय वीरतापूर्वक लड़ा, किन्तु उसे घेर कर मार डाला गया। इस युद्ध का वर्णन यूरोपीय यात्री सेवेल ने अपनी पुस्तक *विजयनगर: ए फारगॉटेन एम्पायर* में किया है।

अरविडु वंश (1570–1652 ई.)

तालीकोटा के युद्ध के बाद रामराय के भाई तिरूमाल ने वैनुगोण्डा (पेणुगोण्डा) को विजयनगर के स्थान पर अपनी राजधानी बनाया। 1570 ई. में इसने तुलुव वंश के अन्तिम शासक सदाशिव को अपदस्थ करके अरविडु वंश की स्थापना की।

1612 ई. में राजा अडयार ने उसकी (वेंकट द्वितीय) अनुमति लेकर श्रीरंगपत्तनम की सूबेदारी के नष्ट होने पर मैसूर राज्य की स्थापना की। श्रीरंग तृतीय विजयनगर का अन्तिम शासक सिद्ध हुआ। इसके साथ ही महान विजयनगर साम्राज्य का पतन हो गया ओर विजयनगर एक छोटा राज्य बनकर रह गया।

विजयनगर का प्रशासन (Administration of Vijaynagar)

विजयनगर साम्राज्य राजतंत्रात्मक था तथा राजा को राय कहा जाता था। कृष्ण देवराय ने अपने अनुपम ग्रन्थ 'आमुक्त माल्यद' में राजा के आदर्श को प्रस्तुत किया है 'अपनी प्रजा की सुरक्षा और कल्याण के उद्देश्य को सदैव आगे रखो तभी देव के लोग राजा के कल्याण की कामना करेंगे और राजा का कल्याण तभी होगा। जब देश प्रगतिशील और समृद्धिशील होगा'।

उत्तराधिकार का कानून आमतौर पर आनुवंशिक सिद्धान्त पर आधारित था, किन्तु ऐसे भी उदाहरण थे जहाँ स्वयं शासन करने वाले राजा ने शान्तिपूर्ण उत्तराधिकार के लिए अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति की।

केन्द्रीय प्रशासन

केन्द्रीय प्रशासन के लिए एक मन्त्रिमण्डल था, जिसका प्रधान एक प्रधानमंत्री था, जो राजा को महत्वपूर्ण प्रशासनिक मसलों पर राय देता था। केन्द्र प्रशासन कई विभागों में बँटा था और हर विभाग की देख-रेख के लिए एक राजाधिकारी था। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल की बैठक जिस हॉल में होती थी, उसे 'वेंकटविलासमानव' कहा जाता था।

राजा मंत्रिपरिषद का परामर्श मानने के लिए बाध्य नहीं था। मंत्रिपरिषद में सम्भवत: 20 सदस्य होते थे। मंत्रिपरिषद के अध्यक्ष को 'सभा नायक' कहा जाता था। राजा के मौखिक आदेशों को लिपिबद्ध करने वाला अधिकारी 'रायसम' कहलाता था। कृष्णदेवराय की मृत्यु के बाद अच्युत देवराय के शासनकाल में नायकों की उश्रृंखला को रोकने के लिए महामण्डलेश्वर या विशेष कमिश्नरों की नियुक्त की गई।

प्रान्तीय प्रशासन

स्रोतों के अनुसार, विजयनगर साम्राज्य छ: प्रान्तों में विभक्त था-

1. प्रान्त—राज्य को प्रान्त कहा जाता था।
2. मण्डल (कमिश्नरी)—प्रान्तों के अंतर्गत थे।
3. कोट्टम या वलनाडु—जिले कहलाते थे।
4. नाडु (परगना या तहसील)—कोट्टम या वलनाडु के अंतर्गत थे।
5. मेलाग्राम (पचास ग्राम)—नाडुओं के अंतर्गत थे।
6. स्थल एवं सीमा—कुछ गाँवों के समूह होते थे।
   प्रशासन की सबसे छोटी इकाई उर या ग्राम थी।

नायंकार व्यवस्था

विजयनगर साम्राज्य में नायंकार व्यवस्था थी। इसके अंतर्गत साम्राज्य की समस्त भूमि तीन भागों में विभाजित थी—

1. **भण्डारवाद भूमि**—यह राजकीय भूमि थी।
2. **अमरम भूमि**—यह भूमि सैनिक सेवा के बदले अमरनायकों और पलाइगारों को दी जाती थी। यह कुल भूमि क्षेत्र का लगभग 3/4 भाग थी। यद्यपि यह भूमि वंशानुगत नहीं होती थी।
3. **मान्या भूमि**—यह भूमि ब्राह्मणों, मन्दिरों या मठों को दान में जाती थी।

विजयनगर साम्राज्य में सेनानायकों को 'नायक' कहा जाता था। अमरम भूमि का उपयोग करने के कारण इन्हें 'अमरनायक' भी कहा जाता था। 'नायक' की स्थिति 'प्रान्तीय गवर्नर' की तुलना में निम्न दृष्टियों से भिन्न होती थी—

- प्रान्तीय गवर्नर राजा का प्रतिनिधि होता था और वह राजा के नाम से शासन करता था, जबकि नायक केवल एक सैनिक सामन्त होता था। उसे सैनिक एवं वित्तीय दायित्वों की पूर्ति के लिए कुछ जिले या प्रदेश प्रदान किए जाते थे।
- गवर्नर की तुलना में नायकों को अपने अमरम प्रान्त में कहीं अधिक स्वतंत्रता प्राप्त थी।
- नायकों का स्थानांतरण नहीं होता था, जबकि गवर्नर प्रशासकीय आवश्यकता के अनुरूप स्थानांतरित या पदच्युत भी किये जाते थे।
- नायकों के पद धीरे-धीरे आनुवंशिक हो गए, जबकि गवर्नर आनुवंशिक नहीं थे।
- नायंकार व्यवस्था की स्थापना विजयनगर शासकों द्वारा सामुद्रिक व्यापार तथा अश्व व्यापार पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के लिए की गई थी।

आयंगार व्यवस्था

विजयनगर काल में ग्रामीण प्रशासन की महत्वपूर्ण विशेषता आयंगार व्यवस्था थी। इसके अंतर्गत शासन के लिए बारह शासकीय व्यक्तियों को नियुक्त किया जाता था। इसी समूह को 'आयंगार' भी कहा जाता था। आयंगारों के पद आनुवंशिक होते थे।

आयंगार व्यवस्था की विशिष्टता थी कि भूमि द्वारा आय का विशेष आवण्टन तथा निश्चित नकद भुगतान पहली बार ग्राम्य सेवकों को किया गया था।

भू-राजस्व

विजयनगर में भू-राजस्व प्रशासन राजस्व नगद और उपज दोनों में वसूल किया जाता था। नगद राजस्व को सिद्धदाय कहा जाता था। भू-राजस्व से संबंधित विभाग अठनवे विभाग कहलाता था और भू-राजस्व को शिष्ट कहा जाता था। भू-राजस्व की राशि उपज के 1/6 भाग से 1/3 भाग तक निर्धारित थी। ब्राह्मणों को उत्पादन का 1/20 भाग कर के रूप में देना पड़ता था और मन्दिरों को 1/30 भाग देना पड़ता था।

तालिका 11.3: विजयनगर काल में प्रचलित कर

कुडिमै/कदम्माप	मुख्य भूमि कृषि कर
तद्वलि	चारागाह कर
केडाक्कासु	पशु कर
मरमजाडि	वृक्ष-उपवन कर
कढ़ाइवरि	व्यवसाय कर
दायम	चुंगी कर
तरगु	दलाली शुल्क
तारीइरावी	बुनकरों पर लगा कर
कुसमन्नम	कुम्भकार पर लगा कर
करबुनवंशुक	लोहार पर लगा कर
नल्लेरूर	गड़ेरिया पर लगा कर
अरसुस्वतंत्रम	पुलिस कर

समाज

विजयनगर साम्राज्य में सामाजिक व्यवस्था वर्णाश्रम पर अधारित थी। यह भारतीय इतिहास का अन्तिम साम्राज्य था, जिसने वर्णाश्रम व्यवस्था पर आधारित पारम्परिक सामाजिक संरचना को सुरक्षित रखा। दक्षिण भारत के अन्य भागों की तरह यहाँ भी क्षत्रिय वर्ण अनुपस्थित था। राजुलु और रचावारू नामक जातियाँ राजवंशों को राजकाज और युद्ध के मामलों में मदद करती थी। कुछ शासक व सेना प्रधान वास्तव में शूद्र थे, किन्तु पद की वजह से 'रचावारू' कहलाते थे। नीची जातियों द्वारा ऊँची जाति के लोगों के विशेषाधिकारों को हड़प लिया गया, जिसने नए सामाजिक तनाव को जन्म दिया। मध्य वर्गों में शेट्टी या चेट्टी नामक बहुत बड़ा समूह था। चेट्टियों के ही समतुल्य व्यापार करने वाले तथा दस्तकार वर्ग के लोगों को वीरपांचाल कहा जाता था।

कैकोल्लार (जुलाहे) कम्बलत्तर अर्थात् चपरासी तथा शस्त्रवाहक, नाई और आन्ध्र क्षेत्र में रेड्डी कुछ महत्वपूर्ण समुदायों में माने जाते थे। छोटे सामाजिक समूहों में लोहार, स्वर्णकार, पीतल का काम करने वाले, बढ़ई, मूर्तिकार और जुलाहे आदि प्रमुख समुदाय थे। विजयनगर में दास प्रथा प्रचलित थी। विदेशी यात्रियों के विवरण और समकालीन अभिलेख पुरुष एवं महिला दासों का उल्लेख करते हैं। मनुष्यों के क्रय-विक्रय को बेस-वाग कहा जाता था।

विजयनगर समाज में स्त्रियों को सम्मान जनक स्थान प्राप्त था। वे महान् विदुषियाँ, साहित्यकार, संगीतकार, लेखाधिकारी, सुरक्षा कर्मी आदि हो सकती थीं। समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित थी। समाज में विधवाओं को बहुत हेय (निम्न) दृष्टि से देखा जाता था। बार्बोसा के अनुसार चेट्टियों, ब्राह्मणों व लिंगायतों में सती प्रथा प्रचलित नहीं थी, जबकि लिंगायत सम्प्रदाय में विधवाओं को जीवित दफन कर दिया जाता था। मठ, मन्दिर एवं अग्रहार विद्या के केन्द्र थे। प्रत्येक अग्रहार में ज्ञान की किसी विशेष शाखा में पारंगत ब्राह्मण होते थे। अग्रहारों में मुख्यतः वेदों की शिक्षा दी जाती थी। बोमलाट एक छाया-नाटक था, जिसका आयोजन मण्डपों में किया जाता था।

अर्थव्यवस्था

विजयनगर साम्राज्य में कृषि उन्नत अवस्था में थी। भू-राजस्व का रियायती मूल्यांकन इस्तवा कहलाता था। सिंचाई में पूँजी निवेश के द्वारा आय प्राप्त की जाती थी। तमिल क्षेत्र में इसे दशावन्दा कहा जाता था और आन्ध्र एवं कर्नाटक में कट्टकोडगै कहा जाता था। विशेष सेवाओं के बदले दी गई भूमि उर्बलि कहलाती थी।

विदेशी व्यापार उन्नत अवस्था में था। व्यापार संबंधी जानकारी के मुख्य स्रोत कृष्णदेवराय की आमुक्तमल्यदा में, डोमेंगो पायस तथा नूनिज का विवरण है। बार्बोसा के अनुसार, भारतीय समुद्री व्यापार पर मुस्लिम सौदागरों का पूर्ण नियंत्रण था। अश्व व्यापार पहले अरबों फिर पुर्तगालियों द्वारा किया जाता था। सफेद चावल, गत्ता तथा लोहे का निर्यात, जबकि हीरों का आयात होता था। मुख्य खानें कृष्णा नदी के तट पर, कुरनूल तथा अनन्तपुर में थीं। मालाबार तट पर सबसे महत्वपूर्ण बन्दरगाह था।

कला एवं संस्कृति (Art and Culture)

वास्तुकला

विजयनगर शासन में मन्दिर निर्माण के कार्यों के फलस्वरूप एक नई शैली की शुरूआत हुई, जिसे विजयनगर शैली के नाम से जाना गया। सेतुबन्ध और स्तंभों की बहुलता और उनके शिल्प की विशेष रूपरेखा उनकी प्रमुखता थी। स्तंभों पर बना सबसे महत्वपूर्ण जानवर घोड़ा था।

मन्दिरों में एक मण्डपम या खुला आँगन था, जिसके साथ ऊँचा आसन होता था, जिस पर देवता की स्थापना विशेष अवसरों पर होती थी। इन मन्दिरों में एक कल्याण मण्डपम भी होता था, जिसके स्तंभों पर काफी कशीदाकारी होती थी। विजयनगर के मन्दिरों में मुख्य स्थान केन्द्र में गर्भगृह था, जहाँ मुख्य देवता स्थापित होते थे। देवता के सहचर के लिए अम्मन होते थे।

इस शैली में बने सबसे वैभवपूर्ण मन्दिर हम्पी-विजयनगर में थे। इनमें सबसे अच्छे उदाहरण हैं—बिट्ठलस्वामी और रामास्वामी मन्दिर। कृष्ण देवराय ने अपनी राजधानी में कृष्णस्वामी, हजारा रामास्वामी और विट्ठलस्वामी के मशहूर मन्दिरों का निर्माण करवाया था। इसने अपनी माँ की याद में एक नए शहर नागलापुरा का भी निर्माण करवाया। इसके अतिरिक्त उसने बहुत सारे राय गोपुरम की भी स्थापना करवाई।

साहित्य

विजयनगर के शासक साहित्य के संरक्षक थे। उनके संरक्षण में कई धार्मिक तथा धर्म-निरपेक्ष पुस्तकें लिखी गईं, जो विभिन्न भाषाओं जैसे—संस्कृत, तेलुगू, कन्नड़ और तमिल में थीं।

बहमनी साम्राज्य (Bahmani Empire)

सल्तनत शासक मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के अन्तिम दिनों में बहमनी साम्राज्य की स्थापना हुई। हसन गंगू (1347-1358 ई.) नामक सरदार ने अलाउद्दीन हसन बहमनी शाह की उपाधि धारण करके बहमन साम्राज्य की स्थापना की। इसने दक्षिण के सभी हिन्दू शासकों को अपने अधीन कर, धार्मिक सद्भाव की नीति अपनाते हुए अपनी हिन्दू प्रजा से जजिया कर न लेने का आदेश दिया।

इसने गुलबर्गा को अपनी राधाजनी बनाया तथा उसका नाम अहसानाबाद रखा। अपने साम्राज्य को इसने चार प्रान्तों में विभाजित किया—गुलबर्गा, दौलताबाद, बरार और बीदर।

मुहम्मद शाह प्रथम—इसने शासन का कुशल संगठन किया। इसके काल की प्रमुख घटना विजयनगर तथा वारंगल से युद्ध था, जिसमें बहमनी साम्राज्य को विजय प्राप्त हुई। इसके काल में युद्ध में बारूद का प्रयोग किया गया।

फिरोजशाह बहमनी—इसका सबसे महत्वपूर्ण कार्य प्रशासन में बड़े स्तर पर हिन्दुओं को सम्मिलित करना था। इसने दौलताबाद में एक वेधशाला बनवाई।

सुल्तान ताजुद्दीन फिरोज (1397-1422 ई.) द्वारा पश्चिम एशियाई देशों—इराक, ईरान एवं अरब देशों से मुसलमानों को भी आमंत्रित किया और उन्हें प्रशासन में उच्च पद प्रदान किया। इसने भीमा नदी के किनारे फिरोजाबाद नगर की नींव डाली।

शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम (1422-1436 ई.)

इसने अपनी राजधानी गुलबर्गा के स्थान पर बीदर को अपनी नई राजधानी बनाया। उसका नया नाम 'मुहम्मदबाद' रखा। शिहाबुद्दीन का शासन धर्म व न्याय के लिए प्रसिद्ध था। इसे इतिहास में सन्त अहमद या अहमदशाह अब्दाली के नाम से भी जाना जाता है। इसके शासनकाल में दलगत राजनीति ने साम्प्रदायिक रूप ले लिया जिससे शिया-सुन्नी मतभेद बढ़ गया।

अलाउद्दीन अहमद द्वितीय (1436-1458 ई.)

इसने एक अस्पताल की स्थापना की थी। इसके काल में अफगानियों का आगमन हुआ था। इसके बाद शम्सुद्दीन मोहम्मद तृतीय शासक बना जिसके काल में निकितिन नामक यात्री ने बहमनी राज्य की यात्रा की। इसके बाद अलाउद्दीन हुमायूं शासक बना जो अपनी क्रूरता के लिए प्रसिद्ध था। इसे दक्कन का नीरो कहा जाता था।

महमूद गवां

यह एक ईरानी था। इसे शम्सुद्दीन मोहम्मद तृतीय ने प्रधानमंत्री बनाया और इत्वाजा-ए-जहाँ की उपाधि प्रदान की। इसने रौजत उल-इंशा एवं दीवान-ए-अक्ष नामक ग्रन्थ की रचना की थी। इसने बीदर में एक महाविद्यालय भी बनवाया तथा बहमनी प्रशासन का सरलीकरण किया एवं साम्राज्य विस्तार किया।

मोहम्मद तृतीय

मोहम्मद तृतीय ने महमूद गवां को राजद्रोह की आशंका में मृत्युदण्ड दे दिया था। इस वंश के अन्तिम शासक कलीमउल्लाह (1526-1538 ई.) के काल में बहमनी राज्य का पतन हुआ तथा बहमनी राज्य पाँच छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित हो गया।

तालिका 11.4: दक्कन के प्रमुख राज्य एवं संस्थापक

राज्य	स्थापना वर्ष	राजवंश	संस्थापक
बरार	1484	इमादशाही	फलउल्लाह इमाद (1574 ई. में अहमदनगर ने इसे अपने राज्य में मिलाया)
बीजापुर	1489	आदिलशाही	युसूफ आदिल खान (1686 ई. में औरंगज़ेब ने मुगल साम्राज्य में मिलाया)
अहमदनगर	1490	निजामशाही	मलिक अहमद (1633 ई. में शाहजहाँ ने मुगल साम्राज्य में मिलाया)
गोलकुण्डा	1512	कुतुबशाही	कुली कुतुबशाह (1687 ई. में औरंगज़ेब ने मुगल साम्राज्य में मिलाया)
बीदर	1526	बरीदशाही	अमीर अली बरीद (1618 ई. में बीजापुर ने अपने राज्य में मिला लिया)

प्रशासन

बहमनी प्रशासन में सुल्तान ही शासन का केन्द्र बिन्दु था, जो निरंकुश तथा स्वेच्छाचारी होता था। वह स्वयं को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। सुल्तान की सहायता के लिए मंत्री होते थे। प्रधानमंत्री को 'वकील-उस-सल्तनत' कहा जाता था। वित्तमंत्री अमीर-ए-जुमला तथा विदेश मंत्री वजीर-ए-अशरफ कहलाता था। सुल्तान ही न्याय की अन्तिम अदालत होता था। सुल्तान के पश्चात् राज्य का मुख्य न्यायाधीश होता था, जिसे सद्र-ए-जहाँ कहा जाता था।

समाज

बहमनी साम्राज्य में भी समाज अन्य दक्षिणी राज्यों के समान ही था, जिसमें हिन्दू-मुस्लिम के साथ-साथ विदेशी मुसलमानों का भी निवास था। यही कारण है कि यहाँ पर शिया व सुन्नी मुसलमानों के बीच साम्प्रदायिक मतभेद अन्य क्षेत्रों के मुकाबले अधिक देखने को मिले।

अर्थव्यवस्था

बहमनी साम्राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्यत: कृषि एवं व्यापार पर निर्भर थी। मालवा जैसा उपजाऊ प्रान्त व भूमि की पैमाइश की व्यवस्था ने साम्राज्य की आय को बढ़ा दिया।

कला एवं संस्कृति

बहमनी साम्राज्य दक्कन क्षेत्र में भारतीय संस्कृति का केन्द्र था। बहमनी शासक फिरोजशाह स्वयं कवि एवं विविध भाषाओं का ज्ञानी था। प्रधानमंत्री महमूद गवां भी कला का एक महान संरक्षक था। उसने राजधानी बीदर में एक भव्य मदरसे तथा महाविद्यालय का निर्माण कराया।

अध्याय सार संग्रह

- विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का नामक दो भाईयों ने की थी। इनके गुरू विद्यारण्य ने इस कार्य में इनका सहयोग किया था।
- विजयनगर साम्राज्य के शासक कृष्णदेव राय के शासनकाल में इतालवी यात्री पाएस, बारबोसा और नूनिज ने भारत की यात्रा की।
- बहमनी राज्य की स्थापना अलाउद्दीन हसन द्वारा 1347 ई. में की गई। इसे हसन गंगू के नाम से भी जाना जाता है।
- तुंगभद्रा दोआब, कृष्णा-कावेरी घाटी और मराठवाड़ा आदि क्षेत्र विजयनगर और बहमनी साम्राज्य के बीच संघर्ष का कारण थे।
- बहमनी साम्राज्य का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक फिरोज शाह बहमनी था। इसने दौलताबाद में एक वेध शाला का निर्माण करवाया था।
- विजयनगर साम्राज्य में सेनापतियों को कुछ भूमि प्रदान की जाती थी जिसे 'अमरम्' कहा जाता था।
- देवराय द्वितीय के शासन काल में अब्दुर्रज्ज़ाक़ नामक फारसी यात्री विजयनगर साम्राज्य की यात्रा की।
- बहमनी शासक फिरोज शाह के समय में दक्कनी ब्राह्मण प्रशासन में महत्वपूर्ण भुमिका अदा करते थे।
- महमूद गवां ने बहमनी साम्राज्य को उत्कर्ष की पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। इसने ईरान, ईराक, मिस्र और टर्की के सुल्तानों के साथ सम्बन्ध स्थापित किया।
- महमूद गवां के शासन काल में बहमनी साम्राज्य अपने शिखर पर था। इसने बहमनी साम्राज्य को 8 प्रांतों में विभाजित किया था।
- बहमनी साम्राज्य के विघटन के बाद गोलकुण्डा, बीजापुर, अहमदनगर, बरार और बीदर नामक राज्यों का उद्भव हुआ।
- बहमनी साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था का मूल आधार निरंकुश राजतंत्र था।
- कृष्णदेवराय की साहित्य में विशेष रूचि थी। उसने 'आमुक्तमाल्यदम्' नामक ग्रंथ की रचना की थी।
- विजयनगर साम्राज्य चार वर्गों में विभाजित था-विप्रलु, राजलु, मोतिकिरतलु और नलवजटिवए।
- विजयनगर साम्राज्य में स्त्रियों की स्थिति संतोषजनक थी। लेकिन देवदासी प्रथा का भी प्रचलन था। सती प्रथा का भी प्रचलन था।
- विजयनगर साम्राज्य में राज्य की आय का मुख्य स्त्रोत भू-राजस्व था। सामान्यतया 1/6 भाग भू-राजस्व की वसूली की जाती थी।
- बहमनी शासक अहमदशाह प्रथम का दक्कन के सूफी संत गेसूदराज ने समर्थन दिया था।

12 अध्याय

मुगल साम्राज्य

इस अध्याय में आप सीखेंगे कि:

- मुगल साम्राज्य की स्थापना कैसे हुई और मुगल शासकों की प्रशासनिक व्यवस्था कैसी थी।
- मुगल काल में ही शेरशाहसूरी ने अपनी प्रशासनिक, भू-राजस्व, सैन्य प्रशासक, मुद्रा इत्यादि क्षेत्रों में कैसे विशिष्ट पहचान बनायी।
- मुगल शासकों में विशेषकर अकबर की नीतियों और उसके द्वारा स्थापित राजनैतिक व्यवस्था और धार्मिक व्यवस्था ने किस प्रकार उसे एक महान शासक के रूप में स्थापित किया।
- मुगल काल की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक नीति ने किस प्रकार एक विशिष्ट पहचान दी।

मुगल साम्राज्य (Mughal Empire)

बाबर (1526-1630 ई.)

बाबर का जन्म 14 फरवरी, 1483 का मावराउन्नहर (ट्रान्स-आक्सियान) की एक छोटी-सी रियासत फरगना में हुआ था। इसके पिता का नाम उमरशेख मिर्जा तथा माँ का नाम कुतलुगानिगार खानम था। बाबर पितृ पक्ष की ओर से तैमूर का पाँचवाँ वंशज तथा मातृ पक्ष की ओर से चंगेज खाँ का चौदहवाँ वंशज था। बाबर ने जिस नवीन राजवंश की नींव डाली, वह तुर्की नस्ल का चगताई वंश था, जिसका नाम चंगेज खाँ के द्वितीय पुत्र के नाम पर पड़ा था।

बाबर अपने पिता की मृत्यु के बाद 11 वर्ष की अल्पायु में 1494 ई. मे फरगना की गद्दी पर आसीन हुआ। बाबर का भारत पर आक्रमण मध्य एशिया में शक्तिशाली उजबेकों (शैबानीखान) से बार-बार पराजय, शक्तिशाली सफावी वंश तथा उस्मानी वंश के भय का परिणाम था।

बाबर ने 1504 ई. में काबुल पर अधिकार कर लिया और परिणाम स्वरूप उसने 1507 ई. में बादशाह की उपाधि धारण की, बादशाह से पूर्व बाबर मिर्जा की पैतृक उपाधि धारण करता था।

बाबर का भारत पर आक्रमण

बाबर के आक्रमण के समय भारत राजनैतिक रूप से अत्यधिक अस्थिर था। बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण दौलत खां लोदी, दिलवार खां एवं राणा सांगा ने दिया था। भारत पर बाबर ने पहला आक्रमण 1519 ई. में युसुफजाई जाति के बाजौर पर किया था। इसी युद्ध के दौरान उसने भेरा के किले को भी जीता था। इस युद्ध में भारत में सर्वप्रथम बारूद का इस्तेमाल किया गया था।

पानीपत का प्रथम युद्ध (21अप्रैल,1526)

पानीपत का प्रथम युद्ध लोदी शासक इब्राहिम लोदी और बाबर के मध्य हुआ। इस युद्ध में बाबर की विजय का मुख्य कारण घूमकर पीछे की ओर से हमला करने की तुलुगमा युद्ध पद्धति (उजबेक) तथा तोपों को सजाने की उस्मानी विधि (रुमी विधि) थी। उस्मानी विधि में दो गाड़ियों के बीच व्यवस्थित जगह छोड़कर उसमें तोपों को रखकर चलाने की विधि थी। बाबर के तोपखाने का नेतृत्व उस्ताद अली और मुस्तफा खाँ नामक तुर्की अधिकारियों ने किया। इस युद्ध में सल्तनत के लोदी शासक इब्राहिम लोदी को पराजित कर बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की। पानीपत के युद्ध में लूटे गए धन को बाबर ने अपने सैनिक, अधिकारियों, नौकरों एवं सगे-संबंधों में बाँटा और कलंदर की उपाधि धारण की।

खानवा और चंदेरी का युद्ध (1527-1528)

खानवा का युद्ध राणा सांगा और बाबर के बीच खानवा नामक स्थान पर 17 मार्च, 1527 को लड़ा गया। इस युद्ध में राणा सांगा की ओर से हसन खाँ मेवाती, महमूद लोदी, आलम खाँ लोदी तथा मेदिनी राय ने भाग लिया था।